अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 2, अंक : 4

अगस्त 2024

स्वतंत्रता के सही मायने

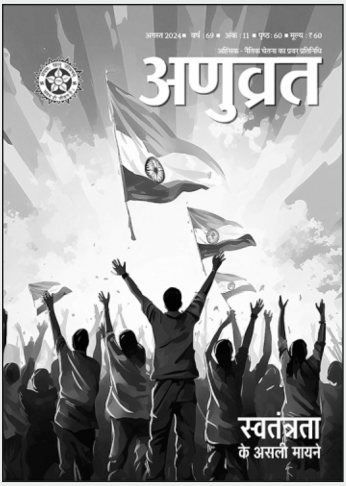

वर्ष: 69 अंक: 11

अगस्त 2024

भगवान महावीर की वाणी मिथ्या, माया और अहंकार से रहित है। आचार्य श्री तुलसी का विचार हमेशा एकता के लिए रहता है। आज उनका प्रयास अणुव्रत के रूप में सफल हो रहा है। आगे और भी सफल होना चाहिए।

- आचार्य देशभूषण

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आजादी का जश्न और गुलामी की बेड़ियाँ

भारत की आजादी अपने साथ गहरे जख्म लेकर आयी थी। किसे पता था कि ये जख्म देश की आत्मा को इस कदर लहूलुहान कर देंगे कि पीढ़ियाँ बदल जाने के बाद भी जब-तब ये जख्म हरे होते रहेंगे।

मानवता का वह एक काला अध्याय था। भारत ही नहीं वरन पूरी दुनिया के नागरिकों के लिए वह एक सबक था। ऐसा सबक जिससे धर्मान्धता की अंधेरी सुरंग की तरफ जाने से ही इंसान घबराये। लेकिन अफसोस! मनुष्य इतनी बड़ी कीमत चुका कर भी मानवता के मर्म को समझ न सका। आज भी दुनिया धर्म के नाम पर हो रही हिंसा से आहत है। भारत भी इससे कहाँ कुछ सीख पाया है! गाहे-बगाहे ये चिंगारियाँ सुलगती रहती हैं जो कब आग बनकर फैल जाएं, कोई नहीं कह सकता। कभी-कभी तो लगता है कि आजाद हिंदुस्तान आज भी गुलामी की बेड़ियों से बाहर नहीं निकल पाया है।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने क्या खूब कहा है - इंसान पहले इंसान, फिर हिन्दू या मुसलमान। आजादी के अमृत महोत्सव के बाद के 25 वर्षीय काल को 'अमृत-काल' कहा जा रहा है। कितना अच्छा हो, इस अमृत-काल में हम समाज में धर्म और जाति के नाम पर खड़ी की गयी दीवारें ढहा सकें! यदि ऐसा हो सका तो 15 अगस्त की आजादी में जो अधूरापन रह गया था, उसे हम पूरा कर पाएंगे। आजादी की वर्षगांठ यह एहसास हर नागरिक के मन में जगा सके, आजादी का सही मतलब सब को सिखा सके, इस 15 अगस्त यही मंगलकामना है।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

मूल वृत्तियाँ और नैतिक मूल्य

■ आचार्य तुलसी

मोक्ष की मान्यता या अवधारणा केवल मान्यता के स्तर पर ही हो तो उसका फलित नैतिकता नहीं हो सकता किन्तु जब व्यक्ति की अवधारणा इतनी पुष्ट हो जाये कि वह अनुभूति के स्तर पर उतर आये तो नैतिकता स्वत: प्राप्त संस्कार बन जाती है क्योंकि आचरण अनुभूति का प्रतिफलन है अथवा प्रगाढ़ अनुभूति का नाम ही आचरण है।

जिस व्यक्ति के स्वीकृत सिद्धांत और आचरण के मध्य श्रद्धा या अनुभूति की प्रगाढ़ता का पुल निर्मित हो जाता है, वह व्यक्ति निश्चित रूप से नैतिक हो जाता है। ओढ़ी हुई अवधारणाओं के आधार पर नैतिकता की बात मात्र स्वप्न या कल्पना ही रहती है क्योंकि उसमें अनुभूति तत्त्व सर्वथा गौण होता है।

भगवान महावीर ने कहा कि केवल ज्ञान या केवल मान्यता ध्येय की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की समन्विति मोक्षमार्ग है। केवल ज्ञानवाद, आस्थावाद या आचारवाद जीवन की एक दिशा है। यह एक दिशा जिस समय बहु-आयामी बन जाती है, ज्ञान के साथ आस्था और आचरण की जड़ें मजबूत हो जाती हैं; उसी स्थिति में मोक्ष की अवधारणा व्यक्ति को नैतिक बना सकती है।

अनुभूति का क्रमिक विकास होता है। अनुभूति जितनी प्रबल होती है, आचरण उतना पुष्ट होता है क्योंकि ये दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। नैतिक आचरण की पूर्णता का सम्बन्ध अनुभूति की पूर्णता के साथ ही है। जब तक यह स्थिति अप्राप्य रहती है, चारित्रिक पूर्णता भी प्राप्त नहीं हो पाती।

अनुभूति का सरलतम मार्ग है गंभीर चिन्तन, गंभीर मनन तथा चित्त की एकाग्रता। मनुष्य का चित्त चंचल है। चंचलता का निरोध होता है मन को किसी आलम्बन पर केन्द्रित करने से। भगवान के सामने प्रश्न आया - ''भंते ! एक अग्र (आलम्बन) पर मन को स्थापित करने से जीव क्या प्राप्त करता है?'' भगवान ने उत्तर दिया - ''एकाग्र मन की स्थापना से वह चित्त का निरोध करता है। मन का गहरा सन्निवेश ध्येय की निर्मिति में होता है, तब ध्येय भी पुष्ट हो जाता है।''

मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों की पूर्ति के साधन संशोधित होकर नैतिक धारणा प्राप्त कर लेते हैं। मूलतः भूख, काम, संग्रह या लड़ाई की वृत्ति नैतिक-अनैतिक कुछ नहीं है क्योंकि व्यक्ति की वृत्ति स्वगत होती है। जब तक स्वगत वृत्ति दूसरों से सम्बन्धित नहीं बन जाती, वह अनैतिक या नैतिक नहीं होती। मूलतः इन वृत्तियों का सम्बन्ध व्यक्तिगत गुण-दोषों से है। भूख, काम आदि वृत्तियां भी क्रियान्वयन के सन्दर्भ में नैतिकता और अनैतिकता से जुड़ती हैं।

भूख मूल प्रवृत्ति है। इसे मिटाने के लिए व्यक्ति अर्थार्जन करता है। अर्थ की उपलब्धि समाज-सम्मत पद्धति से भी हो सकती है और चोरी-डकैती से भी हो सकती है। प्रथम पद्धति परिष्कृत है और दूसरी अपरिष्कृत। दूसरे के प्रति अन्याय करके अर्थार्जन नहीं करना, इस भावना से अनैतिकता का परिष्कार होता है। परिष्कार के लिए संयम की अपेक्षा है। जहाँ संयम का प्रवेश है, वहाँ नैतिकता सहज रूप से सिद्ध होती है।

काम भी एक स्वाभाविक वृत्ति है। अनियंत्रित काम-भावना अनैतिकता को जन्म देती है, किन्तु वही जब अपने विवाहित जीवनसाथी में केन्द्रित हो जाती है, तब यह वृत्ति-परिष्कार की दिशा हो जाती है। स्वदार-संतोष व्रत का मूल्य इसी सन्दर्भ में है।

मनुष्य के पूरे शरीर में विष व्याप्त हो जाता है तो विष-वैद्य से उसकी चिकित्सा करायी जाती है। वह शरीर में फैले हुए

विष को एक बिंदु पर केन्द्रित करता है, फिर उसे निकालकर समूचे शरीर को निर्विष बना देता है। असीम काम-वृत्ति को विवाह की सीमा में बाँधने का अर्थ है व्यक्ति का समग्र जगत के प्रति निर्विषीकरण। उसके मन में काम का जो विष है, वह एक बिन्दु पर केन्द्रित हो गया। इस केन्द्रीकरण के बाद व्यक्ति जब चाहे अकाम की दिशा में गति कर सकता है।

संग्रह की वृत्ति में भी अर्थ-प्राप्ति के स्रोतों की शुद्धि पर ध्यान देकर परिष्कार किया जा सकता है। इसी प्रकार लड़ाकू वृत्ति को अपने भीतर देखने का दृष्टिकोण निर्मित कर परिष्कृत किया जाता है। दूसरों को देखने का अर्थ है - लड़ाई को प्रोत्साहन। अपने प्रति देखने से व्यक्ति अपनी दुर्बलताओं और अपने से विजातीय तत्त्वों को देख सकेगा। इस अन्तर्दर्शन में उसकी लड़ाकू वृत्ति का मोर्चा कहीं बाहर न होकर भीतर होगा। इस प्रकार वृत्ति-परिष्कार की दिशा में आगे बढ़ता हुआ व्यक्ति किसी समय पूर्ण अहिंसक हो जाता है। इस स्थिति में पहुँचने के बाद न उसे संग्रह की अपेक्षा रहती है और न कामुकता ही शेष रहती है।

चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के पीछे अनेक उद्देश्य हैं। जिस प्रकार काव्य का सृजन आनन्द और यश के लिए होता है, उसी प्रकार आचरण की उच्चता भी यश के हेतु स्वीकृत की जाती है। कुछ व्यक्ति राष्ट्रीय और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ऊँचा आचरण करते हैं और कुछ व्यक्ति केवल आत्मख्यापन की दृष्टि से ही उस पथ पर चलते हैं।

चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के पीछे अनेक उद्देश्य हैं। जिस प्रकार काव्य का सृजन आनन्द और यश के लिए होता है, उसी प्रकार आचरण की उच्चता भी यश के हेतु स्वीकृत की जाती है।

आत्मख्यापन प्रतिष्ठा के साथ-साथ व्यावसायिक लाभ भी देता है, इसलिए भी कुछ व्यक्ति इस माध्यम को अपनाते हैं। अमुक कम्पनी या फर्म किसी गलत प्रवृत्ति को प्रोत्साहन इसलिए नहीं देती कि वैसा करने से उसकी प्रतिष्ठा में कमी आ जाएगी। कुछ कम्पनियां तो अल्पकालीन घाटा बर्दाश्त करके भी अपना ख्यापन करती हैं, क्योंकि उससे उन्हें दीर्घकालिक लाभ की संभावनाएं रहती हैं।

आत्महीनता की बात भी सापेक्ष दृष्टि से मूल्य पाती है। साहित्यकारों और भगवद्भक्तों ने इस मूल्य का आश्रय लिया है। 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' आदि पंक्तियां इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हैं। इस पद्धति को अहं-विसर्जन की प्रक्रिया के रूप में स्वीकृत किया गया है, इस दृष्टि से इसको चारित्रिक मूल्य का आधार माना जा सकता है, पर वास्तव में सहानुभूति, आत्मख्यापन और आत्महीनता आदि सभी तत्त्व चारित्र के मूल आधार नहीं हैं, स्वयंजात आधार नहीं हैं क्योंकि इनके साथ कोई न कोई त्रुटि जुड़ी हुई है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का प्रवचन सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

संयमः खलु जीवनम्

संयम ही जीवन है।

अणुविभा

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST 2024

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024

मुख्य विषय

व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण

प्रतियोगिताएं

चित्रकला	गायन (एकल)	भाषण
निबंध	गायन (समूह)	कविता

राष्ट्रीय विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार

स्तर-1 : कक्षा 3-8 ■ स्तर-2 : कक्षा 9-12

सहभागिता

15+ राज्य 200+ शहर/कस्बे 1+ लाख बच्चे

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

https://anuvibha.org/acc acc@anuvibha.org

+91-91166-34514 +91-91166-34517

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

स्वतंत्रता के मायने

■ **राजेन्द्र बोड़ा**, जयपुर

स्वतंत्रता के असली मायने को समझने के लिए हजारों वर्षों से कोशिशें जारी हैं और सैकड़ों विद्वानों व दर्शनशास्त्रियों ने अपनी-अपनी अवधारणाएं दी हैं। यह माना जाता है कि स्वतंत्रता वह स्थिति या अधिकार है जिसमें आप बिना किसी नियंत्रण या सीमा के जो चाहें कर सकें, कह सकें, सोच सकें आदि। जिंदगी को अपने तरीके से जीना, अपना आनंद खुद निर्धारित करना तथा किसी और के जीवन में हस्तक्षेप किये बिना उस आनंद को पाने का प्रयत्न करना स्वतंत्रता का अर्थ होता है।

वास्तव में स्वतंत्रता एक नैसर्गिक मानवीय मूल्य है जिसका छीना जाना परतंत्रता की स्थिति होती है। इसी कारण अधिकतर लोगों के लिए यह प्रश्न राज्य में व्यक्तिगत अधिकारों का भी हो जाता है।

हम स्वतंत्रता को मुक्तिदायी आदर्श के रूप में देखते हैं और इसके पीछे अनेक बेहतरीन कारण भी हैं। पूरे मानव इतिहास में, स्वतंत्र होने की इच्छा ने हाशिये पर पड़े अनगिनत समूहों को राजनीतिक और आर्थिक अभिजात वर्ग के शासन को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया है।

स्वतंत्रता वह नारा भी रहा जिसे लगाते हुए क्रांतिकारियों ने निरंकुश राजा-महाराजाओं, अभिमानी अभिजात वर्ग और दासता की प्रथा में मालिक बने बैठे लोगों को उखाड़ फेंका और पुरानी मानव विरोधी परंपराओं और व्यवस्थाओं को ध्वस्त किया।

पश्चिम में अश्वेत नागरिक अधिकारों और स्त्री को बराबरी का हक दिलाने और लोकतंत्र को स्थापित करने के लिए भी स्वतंत्रता के नाम पर लड़ाइयां लड़ी गयीं। दूसरी तरफ

प्रगतिवादियों ने भी मजदूरों पर से मालिकों के आर्थिक वर्चस्व को समाप्त कर उन्हें स्वतंत्र करने के लिए संघर्ष किया।

स्वतंत्रता की अवधारणा पर प्राचीन काल से ही दर्शनशास्त्र में चर्चा की जाती रही है, जिसमें विचारकों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के बारे में सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं। समकालीन दर्शन में, स्वतंत्रता एक केंद्रीय अवधारणा बनी हुई है, जिसमें विचारक नियतिवाद, जिम्मेदारी और सामाजिक न्याय जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों के साथ इसके संबंधों की खोज करते हैं।

स्वतंत्रता और दायित्व का आपस में नैतिक परिप्रेक्ष्य में गहरा संबंध देखा जाता है और कहा जाता है कि यदि व्यक्ति वास्तव में स्वतंत्र है, तो उसे अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इसीलिए स्वतंत्रता का एक अर्थ आत्मशासन भी बताया गया है। स्वतंत्रता का एक मायने विकल्प चुनने का सामर्थ्य और क्षमता भी है। ऐसे में भी यह स्वतंत्रता व्यक्ति पर उसके परिणामों की जिम्मेदारी भी डालती है।

वर्तमान में स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है। वास्तव में, राजनीति और कानून दोनों ही

स्वतंत्रता को एक स्व-स्पष्ट सत्य मानते हैं, खासकर एक आधुनिक उदार लोकतंत्र में। ऐसे में स्वतंत्रता राज्य और नागरिक के बीच संबंधों तक सीमित हो जाती है और आशा की जाती है कि इसका अंततोगत्वा प्रभाव समाजों पर भी पड़ेगा और उनके भी लोकतांत्रिक बनने की राह प्रशस्त होगी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 19 अक्टूबर, 1929 को लाहौर के एक छात्र सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था - ''यदि हम विचारों में क्रांति लाना चाहते हैं तो सबसे पहले हमारे सामने एक ऐसा आदर्श होना चाहिए जो हमारे पूरे जीवन को एक उमंग से भर दे। यह आदर्श स्वतंत्रता का है।'' लेकिन स्वतंत्रता एक ऐसा शब्द है जिसके बहुत सारे अर्थ हो सकते हैं। स्वतंत्रता से नेताजी का आशय ऐसी स्वतंत्रता से था ''जो व्यक्ति और समाज की हो, अमीर और गरीब की हो, स्त्रियों और पुरुषों की हो तथा सभी लोगों और वर्गों की हो।''

भौतिक दुनिया में, सब कुछ कार्य-कारण द्वारा शासित आवश्यकता के अनुसार होता है। इसलिए, यह मानते हुए कि हम पूरी तरह से भौतिक प्राणी हैं जो भौतिकी के नियमों द्वारा शासित हैं, मानव स्वतंत्रता की अवधारणा पर विचार करना भी असंभव है। इसके विपरीत यह कहना कि हम स्वतंत्र प्राणी हैं, स्वचालित रूप से यह मान लेना होता है कि हम एक स्वतंत्र कारण हैं - यानी, हम अपनी इच्छा से कुछ ऐसा करने में सक्षम हैं जो भौतिक दुनिया में स्वयं बिना कारण के होता है!

दार्शनिक एपिकुरु के अनुसार, नैतिक रूप से स्वतंत्रता का अर्थ 'सभी इच्छाओं को पूरा करना' नहीं है, बल्कि व्यर्थ, अनावश्यक या व्यसनकारी इच्छाओं से मुक्त होना है, जबकि दुनिया को इतिहास की वैज्ञानिक दृष्टि देने वाले विचारक कार्ल मार्क्स का मानना था कि 'ऐतिहासिक आवश्यकताओं का ज्ञान ही स्वतंत्रता है।'

नया तराना

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना ■

जब से देना सीखा,
सचमुच पाना सीख लिया।

हासिल करने की खातिर ही
बहा पसीना-खून,
प्यास बूँद की, सागर
हथियाने का रहा जुनून,
कर पिपासु को तृप्त,
तृप्त हो जाना सीख लिया।

खूब ऐंठ थी, खूब अकड़
क्या खूब सुभीता था,
भरा-भरा-सा रहा, मगर
अंदर से रीता था,
निर्झर-सा बहने का
नया तराना सीख लिया।

जब तक और-और पाने की
भूख सताती थी,
तब तक कुदरत के जादू पर
नजर न जाती थी,
परमानंद मिला, सर्वस्व
लुटाना सीख लिया।

अब पक्षी, तितली, फूलों से
प्राणवायु मिलती,
हर वंचित में नारायण पा
मन-कलिका खिलती,
काँटों में बिंधकर भी अब
मुस्काना सीख लिया।

सूचनाओं के समंदर में हंस–विवेक की दरकार

कल्पना मनोरमा, दिल्ली

आज धरती से लेकर आसमान तक हर ओर हर पल बस खबरें ही खबरें सुनायी–दिखायी पड़ रही हैं। इन खबरों में न गुणवत्ता की परवाह है, न तथ्यों की कसौटियां, न गोपनीयता और न अखंडता के प्रति प्रतिबद्धताएं। न ही जनमानस के आगे परोसी जा रही इन सूचनाओं में किसी भी प्रकार के सिद्धान्त की कोई गुंजाइश समझ में आती है, जबकि सूचना सुरक्षा के मूल सिद्धांत गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता हैं।

आज व्यक्ति के सामने सूचनाओं के अंबार में से अपने लायक उपयुक्त सूचना तलाश लेने की बड़ी चुनौती है। ऐसे में अगर कोई व्यक्ति गलत सूचनाओं के फेर में पड़ जाये तो वह अपने जीवन की यात्रा वैसी ही बना लेता है जैसे फ्लाई ओवर पर एक गलत टर्न लेने से मिनटों की यात्रा घंटों में परिवर्तित कर मुसाफिर सही मुकाम पर पहुँचने से चूक जाता है। सूचनाओं में शांति, धर्म, अहिंसा, सन्मार्ग, आनंद और ऐश्वर्य तलाशती दुनिया को मालूम होना चाहिए कि सूचना मात्र जानकारी, इत्तिला, नोटिस, विज्ञापन, प्रतिवेदन भर है। स्थायी समाधान नहीं। स्थायित्व की चाह रखने वालों को सूचनाओं के इतर सोचना, देखना और समझना होगा।

आज सूचना का महत्व जीवन से ज्यादा दिख रहा है। सूचना ज्ञान, संचार और मूल्य व गुणवत्ता निर्धारण का महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्तमान समय में सूचनाओं को सत्य की कसौटी पर परखे बिना अगर इसके फेर में पड़ गये तो हालत क्या होती है...सब जानते और समझते हैं। वर्तमान समय में सूचना सुरक्षा खतरों की सैकड़ों श्रेणियाँ और लाखों ज्ञात खतरे हैं।

आज सिर्फ राजनीति ही नहीं, उद्यम, सुरक्षा, स्वास्थ्य, धर्म, मनोरंजन, शादी–ब्याह आदि के प्रति आधी–अधूरी सूचनाएँ खतरे के निशान के ऊपर उपलब्ध हैं। गति और तकनीकी विकास के मौजूदा दौर में सुरक्षा उपायों में हर व्यक्ति यानी शहरी, ग्रामीण, व्यवसायी, नौकरीपेशा, किसान, मेहनतकश सबको कम–ज्यादा समझौते करने पड़ रहे हैं। कौन कब ठगी के जाल में फँस जाये, किसी को नहीं पता।

सूचनाओं के इस महान समय में क्या हम इस बात को ठीक से समझ पा रहे हैं? क्या हम अपने आसपास दुष्प्रचार फैलाने से कम से कम अपने को रोक पा रहे हैं? या दुष्प्रचार के इस दौर में अपनों को समझा पा रहे हैं कि हर एक सूचना को सत्य, तप, पवित्रता एवं दान की कसौटी पर देखने के बाद सबसे बड़े धर्म मानवता की कसौटी पर कसकर देखने के वे पक्षधर बने रहें।

व्यक्ति को समझना होगा कि वर्तमान में परोसी जा रहीं सूचनाएँ, खबरें और खबरों में जकड़े प्रलोभन उसके लिए कितने उपयोगी और कितने अनुपयोगी हैं। किन सूचनाओं का उसे स्वागत करना चाहिए और किनका बहिष्कार क्योंकि विकास के मोह में फँसा जीवन अब हंस–विवेक की माँग कर रहा है।

भरी गगरिया चुपके जाये

■ **यशोधरा भटनागर**, देवास

सुबह बरामदे में बैठकर चाय की चुस्कियों संग पेपर पढ़ना भला लग रहा था।

'ॐ सूर्याय नमः, ॐ भास्कराय नमः...।' की आवाज से ध्यान सामने वाली छत की ओर गया। बाबूजी सूर्यदेव को अर्घ्य दे रहे थे। सूर्योपासना कर उन्होंने तुलसा जी को जल चढ़ाया। फिर मिट्टी के सकोरों को जल से भर दिया।

'गुटर गूं...गुटर गूं...' मेरी नजर बाबूजी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो आये कबूतरों के झुंड की ओर गयी।

''हाँ, मेरे दोस्तो, कैसे हो? दाना चाहिए?''

...और बाबूजी जी ने दोनों हाथों से छत पर दाने उछाल दिये। ऊँची गर्दन किये कबूतर गुटर गूं करते मटक रहे थे। कबूतरों से बातें कर कुछ ही देर में बाबूजी कंधे पर कपड़े का झोला टाँगे नीचे सड़क पर खड़े थे।

सड़क के कई श्वान पूँछ हिलाते कूंऽऽ कूंऽऽ करते हुए उनके पास आ गये। बाबूजी ने बड़े प्यार से उन्हें रोटियाँ खिलायीं।

''भूरे, अब कैसे हो? और टॉमी तुम? तुम्हारा पैर कैसा है?''

प्रत्युत्तर में श्वानों की पूँछ तेजी से हिलने लगी और कूंऽऽ कूंऽऽ करते वे बाबूजी के पैरों के पास बैठ गये। श्वानों को पुचकार कर बाबूजी तेज कदमों से सैर को चल दिये। उनका हाथ फिर झोले में गया और उन्होंने कुछ बीज सड़क किनारे हवा में उछाल दिये।

मैंने बाबूजी के आसपास बड़े ध्यान से देखा, वहाँ कोई फोटोग्राफर नहीं था। एहसास हुआ, 'भरी गगरिया चुपके जाये।'

सुगंध अब फैलेगी

■ **आशा पांडेय**, अमरावती

चीजों के स्थान का हेर-फेर करके उसे नया रूप प्रदान कर देना उसका प्रिय शौक था। वह कुछ दिनों में कमरे को परिवर्तित कर देती थी। इस तरह सीमित और पुराने संसाधनों के साथ ही वह नित नूतनता का प्रयास करती रहती थी, लेकिन कमरे को नया रूप देने के लिए आज उसके घर में जो हो रहा है, वह उसके लिए असहनीय है।

आज से पच्चीस साल पहले वह ब्याह कर इस घर में आयी थी। आँगन के पास वाले सबसे बड़े और हवादार कमरे में जेठ-जिठानी का साम्राज्य था। बरामदे से लगकर जो कमरा था, वह अपने बाहरी परिवेश और रातरानी की सुगंध को स्वयं में समेटने की वजह से देवर को प्रिय था। बैठक के पीछे का कमरा अपने छोटे आकार और हवा की समुचित व्यवस्था न होने की वजह से मात्र भंडारघर के लिए उपयुक्त था।

चौथे कमरे यानी बैठक में ससुर जी का आधिपत्य था। बड़े-से आँगन में एक बरामदा निकाल कर उसके एक भाग में अस्थायी रसोई की व्यवस्था की गयी थी। तय हुआ कि

सासू माँ की गृहस्थी रसोई के बगल में ही आँगन के बरामदे को थोड़ा और घेरकर उसमें स्थानांतरित कर दी जाये और उस कमरे के आँगन की तरफ वाली दीवार को तोड़कर वहाँ एक खिड़की बनाकर दूसरे नम्बर वाले बेटे-बहू को दे दिया जाये।

बस, तब से लेकर आज तक हजारों रंगीन सपने उसने उसी कमरे की चारदीवारी में देखे। उसी कमरे में पति के साथ मिलकर उसने भविष्य का ताना-बाना बुना था। फिर एक दिन उसके पति को मुंबई में नौकरी मिल गयी, लेकिन नौकरी छोटी थी। उतनी कम आमदनी में मुंबई जैसे शहर में पत्नी का भी खर्च उठाकर माँ-बाप के लिए कुछ भेज पाना संभव न होता। इसलिए उसे सास-ससुर की सेवा में ही रहना पड़ा। वियोग के एकाकी पलों में भी वह कमरा ही उसका हमदर्द था।

मकान की बायीं तरफ थोड़ी-सी जमीन खाली पड़ी थी। उसमें दो कमरे और बनाने का कार्यक्रम बना। देवर की शादी तक वे दो कमरे बनकर तैयार हो गये थे। देवरानी को रहने के लिए वही कमरा मिला जिसमें उसके पति पहले से ही रहते थे। बगल वाली जमीन के दोनों कमरों को किराये से उठा दिया गया जिससे कुछ अतिरिक्त आमदनी शुरू हो गयी। देवर भी नौकरी पर लग गये थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था।

सास-ससुर के देहांत के बाद तीनों भाइयों में मकान का बंटवारा हुआ। बँटवारे में मिले अपने दोनों कमरों को उसने नये ढंग से सजाना शुरू किया। आगे की बैठक, बैठक ही बनी रही। उसमें सौरभ और प्रिया के पढ़ने की तथा किताब-कॉपी रखने की व्यवस्था भी कर दी गयी। बीच वाले कमरे में पलंग के बगल दीवार से लगकर दो फुट चौड़ा चार फुट ऊँचा ओटा बनवा लिया गया। ओटे के नीचे तीन-चार रैक निकलवा ली गयी। जरूरत पड़ने पर ओटे पर एक व्यक्ति के सोने की व्यवस्था हो जाती थी। सौरभ बड़ा हो गया था। पढ़ाई पूरी करने के बाद वहीं एक स्कूल में

टीचर की नौकरी लग गयी थी उसकी। सौरभ के पिता ने उसका ब्याह तय कर दिया। बहू को देने के लिए एकमात्र वही बीच वाला कमरा था। उसने उसे खाली किया। कमरे का पलंग बाहर के बरामदे में डाल दिया गया।

बहू के माता-पिता ने डबलबेड, सिंगारदान, बड़े-बड़े बक्से आदि दिये थे। जब उसका सामान बीच वाले कमरे में लगाया जाने लगा तो मात्र डबलबेड से ही वह कमरा दो तिहाई से अधिक भर गया। सिंगारदान तथा बड़े बक्से को रखने के बाद तो वह पूरा भरा जा रहा था। ऐसे में कमरे को थोड़ा बड़ा आकार देने के लिए आज उसका ओटा, जिसको बनवाने के बाद उसने राहत की साँस ली थी कि सामान रखने और आराम करने, दोनों की व्यवस्था हो गयी, तोड़ा जा रहा था। बहू के आते ही घर में उसकी सुविधा के लिए तोड़-फोड़ उसे पसंद नहीं आयी थी। उसे लग रहा था कि उसके साम्राज्य पर अचानक आक्रमण हो गया है और उसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो हार मान लेनी पड़ रही है।

स्वामित्व का सुख वह भोग चुकी थी। सब कुछ उसका अपना था। कहाँ क्या रखना है, कहाँ से क्या हटाना है, इसका निर्णय वही लेती थी। अचानक उसके एकाधिकार पर अंकुश लग रहा था। पूरे मनोयोग से बनायी गयी उसकी योजना, जो पहले पति और बच्चों द्वारा प्रशंसनीय थी, अब निरर्थक साबित हो रही थी। ऐसे हालात में उसे बहू अपनी प्रतिस्पर्धी लगने लगी थी।

उसके मन में नयी बहू के प्रति स्वाभाविक प्रेम और ममता का अंकुर सूखता नजर आ रहा था। बरामदे में बैठकर वह ओटा तोड़ने की ठक-ठक की आवाज सुन रही थी। ओटे का बिछोह उसे आत्मिक जन के बिछोह से कम नहीं लग रहा था। उसे लग रहा था, हथौड़े का हर वार उसके सीने पर ही हो रहा है।

क्या सच में कमरा इतना छोटा है कि उसमें बहू का सामान नहीं आ सकता? नहीं, ऐसा नहीं है। सिंगारदान पलंग के बगल में रखा जा सकता है और टीन के बड़े बक्से को ओटे

के ऊपर। छोटे-मोटे अन्य सामान के लिए पलंग के नीचे की जगह पर्याप्त है। कमरा थोड़ा भर जरूर जाएगा, लेकिन ओटा तो टूटने से बच जाएगा।

कुछ क्षोभ, कुछ क्रोध और कुछ उदासी में डूबी वह बरामदे में बैठी थी, तभी बहू आकर बोली – ''माँ! आज खाने में क्या बना लूँ?''

उसने चौंक कर बहू की तरफ देखा – कितना निश्छल चेहरा! वाणी में आदर और प्रेम का कैसा मिश्रण! आँखें नयी दुल्हन के लिहाज से झुकी हुईं, सास के अस्तित्व को शिरोधार्य करती सिर झुकाये सामने खड़ी, चंद दिनों में ही काम की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले लेने वाली उसकी बहू आक्रमण करने वाली तो नहीं हो सकती! यह तो एकदम नाजुक कली है, इसे तो सहारा चाहिए, उसका अपना सहारा।

इस कली की खुशबू पूरी बगिया में फैले, इसलिए उसे अपनी बासी सुगंध समेटनी पड़ेगी। नयी कोंपल पल्लवित होकर आच्छादित हो सके, इसलिए ठूंठ को हटना ही पड़ेगा। अपनी कर्त्तव्यपरायणा बहू के लिए वह स्वयं ऐसा करेगी। पुराने ओटे का गम कैसा? आने वाली बहार क्या कम लुभावनी होगी?

वह एक झटके में उठी, अपनी साड़ी को झाड़ मन की मैल को उड़ा दिया तथा बीच वाले कमरे में जाकर मजदूरों को काम जल्दी खत्म कर कमरा ठीक ढंग से साफ करने की हिदायत देने लगी।

क्या हैं स्वतंत्रता के असली मायने

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

विकारों पर हो संयम का अंकुश

स्वाभिमान और आत्मसम्मान से जीवन जीना, हीन मानसिकता से मुक्ति, समानता और समरसता का अधिकार, शोषण से आजादी, कुविचारों और रूढ़िवादी परंपराओं को तिलांजलि, बड़ों का सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह और विचारों की अभिव्यक्ति ही स्वतंत्रता के वास्तविक मायने हैं। सही मायने में हम आजाद उस दिन होंगे जिस दिन सभी के चेहरों पर मुस्कान तैर रही होगी, कोई भी बदहाल न होगा, सभी खुशहाल होंगे। मन के विकारों पर संयम का अंकुश ही सही अर्थों में आजादी है।

– **नलिन खोईवाल**, इंदौर

स्वतंत्रता है पूर्णत: प्राकृतिक

वैश्वीकरण के इस युग में हम प्रगति पथ पर आगे बढ़ते हुए आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तक का सफर तय कर चुके हैं। भाषा के साथ भाषाई संस्कृति का प्रवाह भी हमारी स्वतंत्रता को छिन्न-भिन्न कर परतंत्रता को स्पष्ट कर रहा है। हम आगामी पीढ़ी को अपनी मातृभाषा में शिक्षा व ज्ञान दे पाने का सामर्थ्य जुटा नहीं पाये हैं। हम प्राकृतिक स्वतंत्रता से दूर कृत्रिम परतंत्रता में गोते खा रहे हैं। स्वतंत्रता पूर्णत: प्राकृतिक है। परतंत्रता अप्राकृतिक हुआ करती है।

– **डॉ. चेतना उपाध्याय**, अजमेर

कर्त्तव्य का बोध आवश्यक

हमारे देश को वर्ष 1947 में आजादी हासिल हुई। अधिकारों के साथ अपने कर्त्तव्यों को भूलते चले गये जिसके कारण लोकतंत्र अपने स्वाभाविक स्वरूप में विकसित नहीं हो पाया। आजादी तभी अपनी गरिमा हासिल कर पाएगी जब हम सभी अपने नागरिक होने का फर्ज अदा करेंगे। आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए अभी से सही दिशा में सार्थक सामूहिक प्रयास करने होंगे, तभी देश का भविष्य उज्ज्वल होगा।

– **इंद्रजीत कौशिक**, बीकानेर

हर क्षेत्र में हो सुखद वातावरण

किसी भी देश के स्वतंत्र होने का अर्थ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा सुखद वातावरण तैयार करना है जिसमें रहकर उसका प्रत्येक निवासी अपने इच्छित क्षेत्र में फले-फूले और देशसेवा में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना सहयोग दे सके। सबसे पहले एक देशभक्त सरकार का होना आवश्यक है, फिर उसके महान कार्यों में कोई व्यवधान न डाल सके, इसके लिए राष्ट्र विरोधी ताकतों को जड़ से खत्म करने का प्रयास होना चाहिए।

– **सन्ध्या गोयल सुगम्या**, गाजियाबाद

स्व का पुनरुत्थान हो

आजादी के मतवालों का केवल एक स्वप्न था – स्व का पुनरुत्थान। क्रांतिवीरों के स्वर में 'स्व' का अभिप्राय स्व शिक्षा प्रणाली, स्व समाज व्यवस्था, स्वसंस्कृति, स्वधर्म और स्वभाषा था, परंतु दुर्भाग्यवश देश की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी इस 'स्व' को दबाने का षड्यंत्र चलता रहा। आज आदर्श चरित्र के अभाव में चरित्र का संकट है। जो महान उद्देश्य हमारे जीवन को सार्थक बनाएगा, उसे चिंतन, अनुभव, अनुभूति एवं पुरुषार्थ से पाना होगा। – **गौरीशंकर वैश्य विनम्र**, लखनऊ

आगामी परिचर्चा का विषय

हर वर्ष क्यों पैदा हो जाते हैं नये रावण?

विजयदशमी या दशहरा – बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व। इस दिन हर वर्ष हजारों–लाखों रावण जलाये जाते हैं। पर क्या, हम रावण को असल में मार पाते हैं? क्या बुराई पर सच्चाई की जीत के इस प्रतीक का कोई अर्थ है? क्या समाज में कोई बेहतरी नजर आती है? रावण रूपी बुराई का अंत करने के लिए भगवान राम को लम्बा संघर्ष करना पड़ा था, गहन साधना करनी पड़ी थी। एक दिन रावण फूँक कर हम कैसे स्वयं को विजयी घोषित कर सकते हैं?

'अणुव्रत' पत्रिका के अक्टूबर 2024 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं मुद्दों पर अपने विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 सितम्बर 2024 तक निम्न व्हाट्सएप नम्बर के माध्यम से भेजें।

9116634512

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

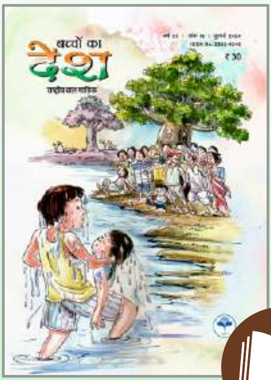

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए
पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

अणुव्रत समाचार

बाल पीढ़ी है हमारे समाज और देश का भविष्य : आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता का सूरत के किडजोन में पदार्पण

सूरत। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत एवं अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के सहयोग से आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास स्थल संयम विहार सूरत में 21 जुलाई को किडजोन का शुभारंभ किया गया।

प्रात: 7:30 बजे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण महावीर समवसरण प्रवचन पंडाल के निकट बने हुए किडजोन में पधारे और अपना आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने मंगल पाठ सुनाया एवं समग्र किडजोन का अवलोकन किया।

अणुव्रत अनुशास्ता ने अपने संक्षिप्त एवं सारगर्भित उद्‌बोधन में फरमाया कि बाल पीढ़ी हमारे समाज और देश

का भविष्य है। समाज को स्वस्थ एवं देश को उन्नत बनाना है तो बाल पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने पर पूरा ध्यान देना होगा। यहाँ आने वाले सभी बच्चों को मनोरंजन के साथ अच्छा ज्ञान और अच्छे संस्कार भी मिलते रहें, इस हेतु किडजोन के संचालक प्रयासरत रहें। उन्होंने खेल के साथ-साथ सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के पाठ भी पढ़ाते रहने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री भीकमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा एवं अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने रिबन खोलकर किडजोन का विधिवत उद्घाटन किया। महामंत्री सुराणा ने किडजोन के उद्देश्यों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी एवं अणुव्रत समितियों से अधिक

से अधिक किडजोन शुरू करने का आह्वान किया। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने किडजोन के निर्माण एवं संचालन के लिए अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा किये गये श्रम की सराहना की। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने भी विचार रखे।

इस अवसर पर व्यवस्था समिति के महामंत्री नानालाल राठौड़, उपाध्यक्ष अंकेश भाई दोशी, अणुविभा संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, बारडोली समिति के अध्यक्ष राजेश चौरड़िया, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के मंत्री संजय बोथरा की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। रेखा ढालावत, रेणु नाहटा सहित किडजोन संचालक टीम ने किडजोन में बच्चों के लिए उपलब्ध गेम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

बारडोली में अणुव्रत वाटिका और किडजोन का शुभारंभ

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में संचालित पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत अणुव्रत समिति बारडोली द्वारा ग्राम पंचायत पंचवटी बाबैन में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन चरणों का स्पर्श पाकर अणुव्रत वाटिका की भूमि धन्य हो गयी तथा वातावरण में एक अलौकिक ऊर्जा का संचार हो गया।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में मंगल पाठ श्रवण करने के पश्चात् अणुव्रत बालोदय किडजोन का लोकार्पण भी हुआ।

इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, बारडोली विधायक ईश्वर भाई परमार, बारडोली शुगर फैक्ट्री के चेयरमैन भावेश भाई, पंचवटी बाबैन ग्राम पंचायत सरपंच फाल्गुनी बेन पटेल, अणुव्रत समिति बारडोली अध्यक्ष राजेश चौरड़िया, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्ता, आशाबेन चोरड़िया परिवार तथा स्कूली बच्चों सहित अन्य लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अणुव्रत वाटिका के सौजन्यकर्ता स्मृति शेष शोकिंद कुमार चोरड़िया की पुण्य स्मृति में पत्नी आशा बेन, सुपुत्र राजेश कुमार, पुत्रवधू पायल बेन, सुपौत्र धैर्य कुमार, अंशु कुमार चोरड़िया परिवार बारडोली (लछुडा) रहे।

पर्यावरण जागरुकता अभियान

अणुव्रत समितियों ने पौधरोपण कर मनाया वन महोत्सव सप्ताह

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देशभर की अणुव्रत समितियों ने वन महोत्सव के दौरान पौधरोपण

कार्यक्रम आयोजित किये। इस अवसर पर विद्यार्थियों और आमजन को पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित किया गया।

चिकमंगलुरु अणुव्रत समिति ने एस. आर. प्राइम नर्चर इंटरनेशनल स्कूल में पौधरोपण किया। इस दौरान अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को सर्टिफिकेट और मोमेंटो वितरित किये गये। समिति ने साई एंजेल स्कूल, महर्षि विद्या मंदिर स्कूल और प्राइड यूरो स्कूल में भी पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया।

जोधपुर अणुव्रत समिति ने चांदपोल स्थित अणुव्रत वाटिका में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। इस दौरान बच्चों को नाश्ता करवाया गया और स्केच कलर, पेंसिल भेंट की गयी।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, फरीदपुर में 300 पौधे लगाये गये। बच्चों को पारितोषिक भी प्रदान किये गये।

मंडी गोविंदगढ़ अणुव्रत समिति ने हरियावल पंजाब के साथ मिलकर अजनाली गाँव में 1150 पौधे लगाये। नगर कौंसिल अध्यक्ष हरप्रीत प्रिंस ने भी पौधे लगाकर अपना योगदान दिया। समिति के अध्यक्ष ने पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के लिए 11 हजार रुपये के योगदान की घोषणा की।

मुम्बई अणुव्रत समिति क्षेत्र वसई व तेरापंथ युवक परिषद् वसई की ओर से सनसिटी में नीम के बड़े पौधे लगाये गये और उनकी सुरक्षा के लिए लोहे की जालियां भी लगायी गयीं।

औरंगाबाद अणुव्रत समिति ने छत्रपति संभाजी नगर में एलोवेरा, नीम, आम, आंवला, नींबू, सहजन, कड़ी पत्ता, मिर्ची और कोथमीर समेत 20 प्रकार के पौधे लगाये गये।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति ने नेहरू विहार सेक्टर 13 के गार्डन में फलदार और छायादार पौधे लगाये गये तथा इनकी देखभाल का संकल्प लिया। जगराओं अणुव्रत समिति ने महाप्रज्ञ स्कूल में पौधरोपण किया।

राजसमन्द अणुव्रत समिति ने भिक्षु निलयम राजनगर में आचार्य श्री महापज्ञ के 105वें जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' पर पौधरोपण किया। भिवानी अणुव्रत समिति ने दुकानदारों से जूट और कपड़े के थैले का उपयोग करने की अपील की। समिति ने जूट के 400 नि:शुल्क थैले वितरित किये।

दिवेर अणुव्रत समिति ने फुलीबाई भैरूलाल नाहर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में पौधरोपण किया।

वापी अणुव्रत समिति अध्यक्ष ने पंच तत्त्वों के प्रदूषण से शरीर के बीमार होने पर प्रकाश डाला।

उदयपुर अणुव्रत समिति व तुलसी निकेतन रेजिडेंशियल स्कूल के तत्त्वावधान में अणुव्रत सर्किल, हिरण मगरी सेक्टर 4 में अशोक, नीम, कनेर आदि के पौधे लगाये गये।

इस्लामपुर अणुव्रत समिति द्वारा बिधाननगर स्थित ब्लाइंड स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम हुआ्। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष ने ईको फ्रेंडली बैग का वितरण किया।

अजमेर अणुव्रत समिति की ओर से सिविल लाइन्स

स्थित जैन मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में 24 तीर्थंकरों के नाम पर मंदिर की वाटिका में 24 पौधे लगाये गये।

इंदौर अणुव्रत समिति और तेरापंथ युवक परिषद् ने इंदौर विधायक कैलाश विजयवर्गीय के आह्वान पर आयोजित वृहद् वृक्षारोपण अभियान एक पेड़ माँ के नाम के तहत महावीर वाटिका में 500 से अधिक पौधे लगाये।

सरदारशहर अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में शाकम्भरी विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण अभियान की शुरुआत कर रामलाल आर्य राजकीय औषधालय में पौधे लगाये।

टमकोर अणुव्रत मंच और महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल ने वृक्ष देखभाल अभियान आयोजित किया। छात्रों ने पौधों की देखभाल का संकल्प लिया।

गंगापुर अणुव्रत मंच ने अष्टम आचार्य श्री कालूगणी समाधि स्थल स्थित अणुव्रत वाटिका में जामुन, गुड़हल, मोगरा और अन्य पौधों का रोपण किया गया।

योग के व्यापक सन्दर्भों को समझें : आचार्य महाश्रमण

अणुविभा के तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

''योग की साधना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। योग में स्वाध्याय, जप आदि को भी जोड़ सकते हैं, इसके साथ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इनकी साधना भी योग साधना है। शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियां इन चारों का संयम करने की साधना भी अपने आप में योग साधना होती है। हम योग के व्यापक सन्दर्भों को समझें और अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की साधना के साथ ही शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों को संयमित रखने की साधना करें तो

योग साधना का महत्व और उपयोगिता बहुत ज्यादा सिद्ध हो सकती है। उपरोक्त विचार अणुव्रत अनुशाास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर व्यक्त किये।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा देशभर में कार्यरत 150 से अधिक अणुव्रत समितियों/अणुव्रत मंचों के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया गया।

जीवन विज्ञान विभाग के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने बताया कि इस हेतु देश को पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और केन्द्रीय जोन में विभाजित कर पाँचों क्षेत्रों के लिए क्रमश: सरला बरड़िया, कुन्नूर को साउथ-जोन, धर्मेन्द्र चोरड़िया, पूना को वेस्ट-जोन, रंजीता जैन, जोधपुर को नॉर्थ-जोन, प्रियंका मालू, गुड़गांव को सेन्ट्रल-जोन तथा पुष्पलता पिंचा, बोरहोला को नॉर्थ-ईस्ट जोन का संयोजक बनाया गया। पाँचों संयोजकों ने अपने-अपने क्षेत्र में कार्यरत अणुव्रत समितियों/अणुव्रत मंच से सम्पर्क कर विद्यालयों, पार्कों, तेरापंथ भवनों आदि स्थलों पर आयुष मंत्रालय द्वारा जारी प्रोटोकॉल के प्रयोगों के साथ-साथ जीवन विज्ञान के विभिन्न ध्यान, योग आधारित प्रयोगों का अभ्यास करवाया। उक्त आयोजनों के साथ-साथ केन्द्रीय टीम के निर्देशन में ऑनलाइन भी कार्यक्रम आयोजित कर अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें सविता जैन का सहयोग मिला। जीवन विज्ञान विभाग के सह-संयोजक कमल बैंगाणी ने बताया कि नेपाल सहित देश के 68 शहरों में आयोजन हुए।

अणुव्रत अमृत विशेषांक

पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'।

अणुव्रत अमृत विशेषांक के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं।

पढ़ता ही चला गया

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' की प्रति प्राप्त हुई। इसे पढ़ा एवं पढ़ता ही चला गया। मुझे इस बात की बेहद खुशी हुई कि अणुव्रत से जुड़े प्रायः सभी बिन्दुओं को इसमें स्थान दिया गया है। लेख-आलेख का चयन अत्यन्त उत्कृष्ट लगा। लेख-आलेख की भाषा एवं भाव को अत्यन्त कलात्मक तरीके से परिष्कृत किया गया है। सम्पादकजी एवं उनकी टीम इसके लिए बधाई एवं साधुवाद की पात्र है। आप सभी लोग कलम के धनी हैं। आप लोगों की कलम में दम है। आपकी लेखनी सतत चलती रहे तथा समय के दस्तावेज पर एक सशक्त हस्ताक्षर बनें, यही मंगलकामना है।

– **डॉ. बसन्तीलाल बाबेल**, लावा सरदारगढ़

नैतिक चेतना की मशाल

अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों की अनवरत यात्रा की सम्पूर्ति पर 'अणुव्रत' पत्रिका का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' नैतिक

चेतना की मशाल के रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। 498 पृष्ठीय संग्रहणीय यह विशेषांक सारगर्भित सामग्री समेटे है। सम्पादक श्री संचय जैन एवं सह-सम्पादक श्री मोहन मंगलम का श्रम 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में स्पष्ट झलकता है। दोनों को हार्दिक बधाई। यह हर्ष का विषय है कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन आज भी अपनी प्रासंगिकता के साथ उत्तरोत्तर गतिशील है और भविष्य में यह और व्यापक एवं गतिशील होगा। साधुवाद।

– **हरदान हर्ष**, जयपुर

ऐतिहासिक दस्तावेज

अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के स्वर्णिम अवसर पर प्रकाशित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसमें जहाँ अणुव्रत आंदोलन की आध्यात्मिक ऊर्जा को विद्वान संतों व विदुषी साध्वियों ने अपने ज्ञान, ध्यान एवं अनुभव से प्रतिपादित किया है, वहीं अणुव्रत कार्यकर्ताओं की अनुभव जनित वैचारिक पृष्ठभूमि से आंदोलन की प्रेरणा व प्रभाव को उद्घाटित किया गया है। इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपूर्ण अणुव्रत परिवार साधुवाद का पात्र है।

– **प्रकाश तातेड़**, उदयपुर

अनमोल आलेखों का समाहार

अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अनमोल तथा अनुकरणीय आलेखों का समाहार है। अणुव्रत दर्शन का मूल मंत्र है – 'संयम: खलु जीवनम' अर्थात् संयम ही जीवन है। मानव को मानव बनाने का अभियान है अणुव्रत आंदोलन। अगर कोई व्यक्ति अणुव्रत के सिद्धांतों को अपना ले तो वह सही अर्थों में मानव बन जाएगा।

– **सुधा आदेश**, बेंगलुरु

अणुव्रत की विकास यात्रा का परिचायक

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' प्राप्त हुआ, जिसका अध्ययन सुखद और प्रभावपूर्ण रहा, क्योंकि यह एक पावन ग्रंथ समान ही है। इस वृहद् विशेषांक को पढ़ते समय अणुव्रत की ऐतिहासिक विकास यात्रा का सम्पूर्ण परिचय मिला। इसमें प्रकाशित वैविध्यपूर्ण आलेखों के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन के अनमोल सिद्धान्तों से परिचय हुआ।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में संकलित आलेख तो महत्वपूर्ण हैं ही, कहानियां, कविताएं और प्रेरक प्रसंग भी गागर में सागर भरते प्रतीत होते हैं। सुधी संपादक श्री संचय जैन, सह संपादक मोहन मंगलम जी तथा पूरे संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई देती हूँ, क्योंकि इन सबके अथक परिश्रम और लगन के फलस्वरूप ही यह भव्य और संग्रहणीय विशेषांक हमारे समक्ष है।   – **सुकीर्ति भटनागर**, पटियाला

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

अणुव्रत आचार संहिता

- ☐ मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- ☐ मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- ☐ मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- ☐ मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- ☐ मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- ☐ मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- ☐ मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- ☐ मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- ☐ मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- ☐ मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- ☐ मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

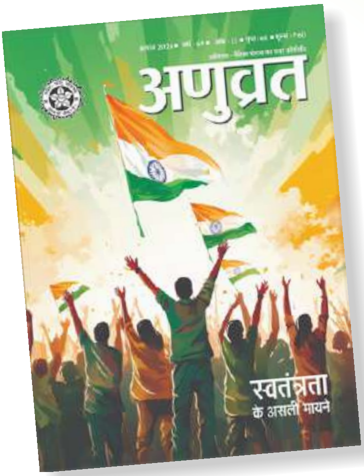

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 69 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	-	₹ 750
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी	-	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :